इख्लासे नियत

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

हदीस के इस्लाही मजामीन उर्दू से खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

नियत कहते हे दिल के इरादे को.

अल्लामह नव्वी (रह) ने अपनी किताब के पहले बाब को इख्लास के उन्वान पर काइम किया हे के आदमी को हर अमल खालिस अल्लाह के वास्ते करना चाहिए और अपने तमाम आमाल, अफआल, अकवाल, और अहवाल में मुस्तहज़र रखनी चाहिए.

नियत पर मदार कयुं?- नियत कहते हे दिल के इरादे को हर काम का मदार शरीअत में नियत के उपर रखखा गया हे वो इसलिए के जितने भी काम हे ज़ाहिरी एतेबार से भी उनका मदार दिल और कल्ब पर था और बातिनी व रूहानी एतेबार से भी उसकी बुनियाद कल्ब के अमल ही पर मौकूफ रखी गई.

अब नियत तो इरादे और अज़्म को कहते हे लैकीन हदीष में जहां नियत का लफ्ज़ इस्तेमाल किया गया वहां मुराद होता हे वो मकसद और गज़रो गायत जिसके पैशे नज़र आदमी काम को अन्जाम दिया करता हे. जैसे एक आदमी को हमारे साथ दिली

मुहब्बत हे और उसके दिल में हमारे वास्ते मुकाम हे और इसी दिली मुहब्बत का तकाज़ह हे के वो हमारे साथ इकराम का और राहत पहुंचाने का मामला कर रहा हे तो इसके उस अमल की कदरो किमत हमारी निगाहों में बहुत बडजाएगी और हम युं सोचेंगे के दुनिया में ऐसे कितने लौग हे जो हमारे साथ इस तरह मुहब्बत का मामला करने वाले हे. लैकीन अगर हमे मालूम हो जाए के असल तो उसकी कोई ज़रूरत और काम हे जो वो हमसे करवाना चाहता हे इसलिए उसने ये सारा कुछ किया हे तो उसकी कदरो किमत हमारे दिल से खत्म हो जाएगी के अपनी गर्ज़ के वासते मेरे साथ ये मामला हे मेरे साथ मुहब्बत नहीं हे ये तो अपना काम मुजसे निकलवाना चाहते हे. अल्लाह के यहां भी हर अमल के अन्दर उसी तरह हे हर अमल में अल्लाह के यहां भी नियत और जज़्बे को देखा जाता हे.

ईमाम नव्वी (रह) फरमा रहे हे - अल्लाह की इबादत खालिस इसलिए करो की तमाम चीजों से हट कर तमाम अगराज़ से अलग हो कर अल्लाह की तरफ मुतवज्जह हो कर नमाज़ पढो अल्लाह के खातिर ज़कात दो, इसलिये के अल्लाह तक पहुंचाने वाला रास्ता यही हे. अल्लाह के यहां असल तो उन आमाल को उभारने वाला जज़्बा हे आप का दिल जिस गरज़ और जज़्बे के पैशे नज़र ये

आमाल वूजुद में ला रहा हे वो जज़्बा अल्लाह के यहां देखा जाता हे.

अमल की कद्रो कीमत नियत के मुताबिक तय की जाती हे इसलिए अल्लामह नव्वी (रह) ने दुसरी आयत पैश फरमाई तरजुमा : के कुरबानी के जानवर जो कुरबानी के दिन या हज के मौका पर ज़ुबह किए जाते हे उन जानवरो का गोश्त और उनका खून अल्लाह तक नहीं पहुंच्ता खून यही रेह जाता हे और गोश्त तूम खा जाते हो लैकीन तुम्हारे दिल के जज़्बात जिनकी बुनियाद पर तुमने अल्लाह के वास्ते ये कुरबानी दी हे वो अल्लाह के यहां पहुंचती हे अल्लाह के यहां उसकी कदर हे असल चीज अल्लाह के यहां यही देखी जाती हे. इसलिए रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फरमाया के आदमी के आमाल का मदार नियतो के उपर हे जैसी नियत वैसा ही उसका अमल जिस किसम की नियत होगी अमल की कद्रो कीमत इसीके मुताबिक तयकी जाएगी.

रसूलुल्लाहﷺ फरमाते हे के हर एक आदमी को वही मिलता हे जिसकी उसने नियत की बाज़ शुरराहे हदिष ने तो दौनो को एक ही मफहुम में लिया हे लैकीन दुसरे हज़रात फरमाते हे के बाज़ मरतबा ऐसा होता हे के अमल एक होता हे लैकीन इस अमल के पीछे अगर बीसों नियते काम कर रही हे तो चुंके अल्लाह के यहां

इन नियतो पर मामला किया जाता हे इसलिए अमल के एक होने के बावुजूद उन कई नियतो को मद्दे नज़र रखते हवे आपको उन्ही नियतो के मुताबिक बे शुमार सवाब और अज़र दिया जाएगा.

अल्लामह नवाब कुत्बुद्दीन देहलवी (रह) ने मज़ाहिरे हक्क में उसकी मिसाल देते हुवे फरमाया के एक आदमी मस्जीद आता हे तो मस्जीद आने का मतलब हे के जमात के साथ नमाज़ अदा करे अब वो नियत करे के मस्जीद में जाउन्गा अल्लाह के घर में हाजरी होगी और वहां एतेकाफ करूंगा, ये भी नियत कर ले के वहां कोई दीन की बात सुन्ने को मीलेगी, वहां मुसलमानो के साथ मुलाकात होगी तो सलाम करेंगे, खैरीयत पुछेंगे, उनको मुहब्बत की नज़र से देखेंगे ये भी नियत करलें के कोई बीमार मिल गया तो उसकी इयादत का मौका मिल जाएगा, तो जितनी नियते आप कर सकें करलें आप घर से मस्जीद में आए ये एक अमल हे लैकीन इस एक अमल के बावूजुद अल्लाह की तरफ से आपके दिल में जितनी नियते हे उन नियतो के मुताबिक अजरो सवाब मिलेगा.

नियत अमल की रूह हे अल्लाह के यहां सवाब का मदार अमल पर नहीं हे अमल तो ज़ाहिरी ढांचा हे अमल की रूह तो वो नियत इरादा और इख्लास हे जिसके पैशे नज़र अमल वुजूद में लाया जा

रहा हे, दुनीया की तमाम चीजों में आप देखते हे के उसका एक ज़ाहिरी ढांचा और ज़ाहिरी शकलो सुरत होती हे और एक उसकी अंदरूनी रूह होती हे जैसे पंखा चल रहा हे इसके हाथे लगे हुवे हे और

अन्दर मशीन लगा हुवा हे सब कुछ ठीक हे लैकीन उसकी रूह बिजली हे बिजली ना हो तो वो बेकार हे पंखा नहीं चलेगा, इसी तरह हर चीझ के अन्दर उसकी एक ज़ाहिरी शकलो सुरत होती हे एक अंदरूनी रूह होती हे जब तक ये रूह हे तब तक उसकी कदरो किमत हे, रूह नहीं हे तो मामला खतम हो जाता हे, इन्सान जैसा इन्सान काइनात के अन्दर इस्से बडी और कोन्सी चीझ हो सकती हे अल्लाह ने इन्सान को सारी काइनात के अन्दर सबसे अशरफ और सबसे अफज़ल बनाया, इसका हाल भी ये हे के अगर उसकी रूह कब्ज़ हो जाए तो इस जिसम को लौग दो दिन के लिए भी घर में नहीं रखेगे, औलाद को अब्बा के साथ बहुत मुहब्बत हे, बीवी को अपने शौहर के साथ बहुत मुहब्बत हे, भाईयो को अपने भाई के साथ बहुत मुहब्बत हे, लैकीन इन्तेकाल के बाद इस जिसम को कोई रखने के लिए तैयार नहीं और ना जिसम रखने के काबिल हे रूह निकल गई तो अब लौग इसकी कोशिश करते हे के जल्दी से जल्दी इसको दफन करदो अगर रहने देंगे तो सड जाएगा, बदबू

होगी और नफरत पैदा होगी और दीलों में मुहब्बत के जो जज़्बात हे उसमे तबदीली आ-जाएगी तो रूहे हेवानी थी तब तक उसकी कदर थी आव भगत थी और उसको हाथों हाथ लिया जाता था वो नहीं रही तो इस ज़ाहिरी जिसम की कोई कदर नहीं.

हर अमल का यही हाल हे अल्लाह के यहां इसकी नियत जज़्बा और वो इख्लास जिसके पैशे नज़र अमल वुजूद में लाया जाता हे वो इसकी रूह हे इसलिए लिखा हे के बडे से बडा अमल अगर इसमे ये रूह नहीं हे तो अल्लाह के यहां इस अमल की कोई कदरो किमत नहीं हे.

बल्के हो सकता हे के ये अमल अपनी ज़ाहिरी शकलो सुरत और ज़ाहिरी एतेबार से खुबी के बावूजद आपके लिए अज़ाब का सबब बन जाए अहादीषा में किस्से आते हे, रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फरमाया कयामत के रोज़ सबसे पहले हिसाबो किताब के लिए तीन आदमीयों को बुलाया जाएगा इनमे एक शहीद होगा दुसरा कारी व आलिम होगा और तीसरा सखी होगा.

अल्लाह शहीद से पुछेंगे के भाइ कयुं हम ने आपको कुव्वत अता फरमाई थी जिस्मानी सिहत अता फरमाई थी हमारी इस नेमत की क्या कदर की वो जवाब में कहेगा बारी तआला तेरे दीन के कलमे

को बुलन्द करने के वास्ते मैने बडी मेहनतें और मशक्कत उठई यहां तक के एक वकत वो आया के अपनी जान तक दे डाली अपने आपको कुरबान कर दीया बारी तआला की तरफ से कहा जाएगा ये सब जो कुछ तुने किया था ये तो इसलिए किया था के लौग बातें करें के बडा बहादुर हे, आप अंदाज़ा लगाए के दुनीया में जान देने से बडकर और कोन्सा अमल हो सकता हे लैकीन वो दी हुई जान भी जब के नियत ठीक नहीं थी तो काम नहीं आई. बारी तआला फरिश्तों से फरमाएंगे जावो इसको घसीट कर जहन्नम में ले जावो यानी इस नियत के दुरूस्त ना होने पर इतना ही होता के उस अमल पर कोई सवाब नहीं मिलता तब भी गनीमत था यहां तो इस अमल पर जहन्नम में भेजा जा रहा हे.

यही हाल सखी का हे सखावत के दरवाजे खुले हुवे थे अल्लाह ने मां की नेमत अता फरमाई थी बारी तआला की तरफ से पुछा जायेंग हमने तुम्हे दौलत अता फरमाई थी उसका क्या किया जवाब देगा बारी तआला तेरी दी हुई इस दौलत को मैने नैकी के कामों में जहां आपने खर्च करने के लिए कहा था मसलन मस्जीदमे मद्रसा में फलां, फलां और फलां कामो, ऐसी जगह नहीं छोडी जहां खर्च करना नैकी का काम बत्लाया हो और आपकी

तरफ से उसकी ताकीद हो और मैने खर्च ना किया हो बारी तआला की तरफ से कहा जाएगा ये सब तुने इसलिए किया था ताके कहा जाए के बडा सखी हे फरीश्तों को कहेंगे ले जावो माल खर्च करने से बडी चीझ और कौन्सी होगी लैकीन वहां भी ये हाल हे.

एक आलिम अल्लाह के दिए हुवे इल्म को फैला रहा हे, बारी तआला की तरफ से इस्से पुछा जाएगा हमने इल्म दीया था क्या किया, वो कहेगा बारी तआला पढा और पढाया और उस्की खूब तरवीज और इशात की और लौगों को खूब सिखाया दीन के करीब किया दावतें दी, बारी तआला की तरफ से कहा जाएगा ये इसलिए था के लोग कहे के बडा आलिम और बडा कारी हे. हवाला- मिश्कात ३३-किताबुल इल्म फस्ले सानी मुस्लिम.

तो देखिए यहां ये कोई दुन्यवी अमल नहीं हे बल्के दीनी अमल हे और इस वकत दुन्या में उंचे-उंचे जो आमाल हो सकते हे उन्मे से हे लैकीन नियत दुरूस्त नहीं थी और जज़्बा सहीह नहीं था इसलिए इस अमल के उपर बजाए उसके के सवाब मिलता और जन्नत का फैसला होता जहन्नम का फैसला कर दीया गया, अमल हे ज़ाहिरी शकलो सुरत हे सब कुछ हे लैकीन अन्दर का मामला खराब था इसलिए उसको बजाए सावाब मिलने के सजा हुई.

अच्छी नियत बगैर अमल के भी बाइसे सवाब हे अगर अमल नहीं हे और नियत हे तो बहुत सी मरतबा अमल ना होने के बावजूद नियत के उपर सवाब मिलता हे मसलन एक आदमी जमात के साथ नमाज़ पडने के लिए घर से निकला उसको मालूम हे के यहां मस्जीदे अबरार में इशा की जमात ८:३५ को होती हे हालांके गुज़श्ता कल से वकत ८:२० हो गया हे अब वो तो ८:३५ के हिसाब से घर से निकला यहां आ-करके देखा तो इमाम साहब सलाम फेर चुके थे लैकीन अहादीष के अन्दर हे रसूलुल्लाहﷺ इरशाद फरमातें हे के उसको जमात का सवाब मिल गया इसलिए के वो तो यही समझे हुवे था के जमात का ये वकत हे और उसीके मुताबिक उसने तय्यारी की और इसी इराद से आया अब मौका ना पा शका तो कोई हरज की बात नहीं नियत थी इसलिए अल्लाह की तरफ से उसी नियत के उपर उसको सवाब मिल जाएगा, ये तो एक अमल हुवा.

बुखारी शरीफ में रिवायत मौजूद हे के एक आदमी दुसरे मालदार आदमी को देख रहा हे के अल्लाह के रास्ते में खूब खर्च कर रहा हे और ये अपने दिल में युं सोच रहा हे के अगर अल्लाह ने मुझे भी दौलत अता फरमाई होती और ये नेमत अल्लाह ने मुझे भी दी होती तो मे भी इसी तरह नैकी के कामों में खर्च करता जिस तरह ये खर्च

कर रहा हे तो हदिष में हे रसूलुल्लाहﷺ फरमाते हे के उसको भी वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा खर्च करने वालों को मिल रहा हे.

उसके बर खिलाफ एक आदमी को अल्लाह ने माल दे रख का हे और वो उसको गलत कामों में खर्च कर रहा हे अब ऐेक आदमी युं सोच रहा हे के ओहो मेरे पास भी अगर माल होता तो खूब गुल छडे उडाता और खूब मझे लैता और खूब गुनाह के काम करता ये लाता टी.वी. लाता और फलां फलां काम करता हालां के उसके पास कुछ भी नहीं हे घर पर टी.वी. नहीं हे और पैसा भी नहीं हे लैकीन दिल में ये इरादे हे तो उसके साथ वही मामला होगा, देखी ये अमल नहीं हे सिर्फ नियत हे तो नियत के मुताबिक यहां मामला हे.

अमल के बगैर सिर्फ नियत पर अल्लाह की तरफ से मामला होता हे

इस मज़मून की ताइद इस रिवायत से भी होती हे जो हवाला- फजाइले सदकात सफा ७० मिश्कात बरिवायते तिरमीज़ी जिल्द दो सफा ५८.

फजाइले सदकात में हज़रत शैख (रह) ने तहरीर फरमाई हे, हज़रत कबसा (रदी) फरमाते है के रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फरमाया के तीन चीज़ें में कसम खा कर बयान करता हुं और उसके

बाद एक बात खास तौर से तुम्हें बताउंगा उसको अच्छी तरह महफ़ूज़ रखना वो तीन बातें जिन पर कसम खाता हुं

उन में से अव्वल ये हे के किसी बन्दे का माल सदका करने से कम नहीं होता और दुसरी ये हे के जिस पर ज़ुल्म किया जाए और वो उस पर सबर करे तो हक तआला शानहु उस सबर की वजह से उसकी इज्ज़त बडाते हे, तीसरी ये हे के जो शख्स लोगों से मांगने का दरवाजा खोलेगा हक तआला शानहु उस पर फकर का दरवाजा खोलते हे.

उन तीन के बाद एक बात तुम्हें बताता हुं उसको महफ़ूज़ रखो वो ये हे के दुनिया में चार किसम के लोग होते हे एक वो जिसको हक तआला शानहु ने इल्म भी अता फरमाया और माल भी अता फरमाया वो अपने इल्म की वजह से अपने माल में अल्लाह से डरता हे के उसकी खिलाफे मरज़ी खर्च नहीं करता बल्के सिलारहमी करता हे और अल्लाह के लिए उस माल में नैक अमल करता हे उसके हुकुक अदा करता हे ये शख्स सबसे उंचे दरजों में हे.

दुसरा वो शख्स हे जिसको हक तआला शानहु ने इल्म अता फरमाया और माल नहीं दिया उस्की नियत सच्ची हे वो तमन्ना करता हे के अगर मेरे पास माल होता तो मै भी फलां की तरह से

नैक कामों में खर्च करता तो हक तआला शानहु उस्की नियत की वजह से उस्को भी वही सवाब दैता हे जो पहले का हे और दौनो सवाब में बराबर हो जाते हे.

तीसरे वो शख्स हे जिसको हक तआला शानहु ने माल अता किया मगर इल्म नहीं दिया वो अपने माल में गडबड करता हे बे फिज़ुली में खर्च करता हे, ये शख्स कयामत में खबीश तरीन दरजे में होगा.

चौथा वो शख्स हे जिसको हक तआला शानहु ने ना माल अता किया ना इल्म दिया वो तमन्ना करता हे के अगर मेरे पास माल मौजूद हो तो मै भी फलां यानी तीसरे की तरह खर्च करूं तो उसको उस्की नियत का गुनाह होगा और वबाल में ये और तीसरा बराबर हो जाएगा.

और ये बातें तो थी उन चीज़ों की जो गुनाह के या नैकी के काम हे बल्के ये नियत तो एक ऐसा अजिबो गरीब नुस्खा हे के वो काम जिनको हम अपनी जरूरत की वजह से अंजाम दैते हे मस्लन हमारी तबइ जरूरतें जो अल्लाह ने एक इन्सान और जानदार होने की हेसियत से हमे अता फरमा रखी हे के जब तक खाना ना खाए हम ज़िन्दाा नहीं रह शकते, भूख का तकाज़ह होता हे खाना ही पडता हे, प्यास का तकाज़ह होता हे पानी पीना ही पडता हे, इस्तिन्जा, खाने

और बयतुल खला में पैशाब खाना में जाना ही पडता हे, ये तब्इ उमूर जो हम अंजाम दैते हे खानापीना सोना कजाये हाजत के लिए जाना हालांके ये तो हमारे अपने काम हे अपनी ज़िन्दगी बशर करने के वास्ते और अपने आपको ज़िन्दा रखने के लिए तब्इ उमूर पर उन उमूर को अन्जाम दैना हे लैकीन अगर कोई अल्लाह का बन्दा अपनी नियतो को दुरूस्त करले और उन कामो को भी सिर्फ इसलिए नहीं के अपनी ज़िन्दगी बरकरार रखनी हे बल्के कुछ और नियते खैर उस्के अन्दर शामिल करले कोई अच्छा इरादा साथ में मिलाले तो यही काम उसके लिए इबादत बन जाएगा.

कहने का मतलब ये था के नियत की दुरूस्तगी इतनी अहम हे के उसीके उपर सारे दीन का मदार हे जो काम इबादत के हे उन में नियत होनी ही चाहीये उसके बगैर वो इबादत बनेंगे ही नहीं और सवाब भी नहीं मिलेगा बल्के अगर नियत गडबड वाली हुई तो सजा मिलेगी लैकीन जो काम इबादत के अलावा हम आदत के तौर पर करते हे खानापीना वगैरा उसमे भी अगर हम नियत दुरूस्त कर लेंगे तो फिर हमारे इस इख्लास की वजह और नियत की दुरूस्तगी की वजह से अल्लाह हमको इन कामो पर भी वही सवाब अता फरमाएंगे जो इबादतों पर अता फरमाया करते हे वरना जहां नियत

का एहतेमाम नहो तो फिर हमारी इबादतें भी आदतें बन जाती हे.

देखिए नमाज़ जैसी इबादत में भी क्या होता हे? हमारी नमाज़ें ओटोमेटिक होती हे नियत बांधी अल्लाहु अकबर कहा वहां से लैकर अस्सलामु अलयकूम वरहमतुल्लाह कहने तक क्या हुवा उसको पुछो कहेगा बस चार रकात तो पडली सब कुछ पढा ऐसा नहीं के कुछ नहीं पढा लैकीन क्या हुवा वो पता नहीं यहां देखिए नियत हाजिर नहोने की वजह से हमारी नमाज़ जैसी इबादत भी एक कुदरती अमल बन गया एक आदत और एक ओटोमेटिक चीझ बन गई इबादत के लिए नियत को हर वकत हाजिर रखना चाहिए.

आदमी जब भी कोई काम करे तो नियत की पैशे नज़र रख कर करे तब ही इबादत के अन्दर भी बात बनेगी कयुंके इबादत उसी वकत इबादत केहलाएगी और आदत के अन्दर भी अगर नियत का इस्तीहजार रहेगा तो फिर इस सूरत में अल्लाह के वास्ते करने का जज़्बा कार फरमा होगा.

नियत के मामला में हमारी कोताहीयां आज कल हमारे जो काम हे उन में हमारे अन्दर क्या कोताहीयां हो रही हे कोताहीयों में एक तो ये हे के हम में जो लौग दीनदार केहलातें हे और इबादतों को अंजाम

दैते हे अपने अपने वकत पर पांच वकत नमाज़ें अदा करते हे, रोज़े रखते हे, ज़कात अदा करते हे इनकी इबादतें भी आदत जैसी बन गई हे यानी इबादतों में नियतो का इस्तीहजार होना चाहीये वो कमा हक्कहु

नहीं हो पाता अगरचे वहां रियाकारी तो नहीं हे आम तौर पर आदमी जब पांच वकता नमाज़ें अदा करने आता हे तो कोई ऐसी नियत नहीं होती दिल में कोई रियाकारी का सवाल पैदा नहीं होता वो अपने को कोई बुज़ुर्ग नहीं समझता इल्ला साजो नादिर बाकी ये खराबी हे के नियत का इस्तेहजार नहीं होता हां नवाफिल का जहां मामला आता हे तो कुछ दूसरे जज़्बात कार फरमा होते हे मस्लन हमने अव्वाबिन पढली इशराक पढली चाश्त पढली तहज्जुद पढली तिलावतों का इहतेमाम कर लिया तो फिर शैतान दूसरी राह से आता हे वैसी भी उनकी अदायगी में जो जि लगना चाहिए और जो इस्तेहजार होना चाहिए वो तो हे ही नहीं साथ में फिर रियाकारी नामो नमूद शोहरत का जज़्बा होता हे के लौग हमको बडा कहेंगे नैक समझेगे बुज़ुर्ग समझेगे अल्लाह वाला मानेंगे ये जज़्बात भी आने लगते हे इसी तरह खर्च करना अल्लाह के रास्ते में देना और दूसरे बडे बडे कामो में भी ये चिझे आने लगती हे और हमारी जो आदतें हे यानी तब्इ उमूर उनमे तो उन चीज़ों का इस्तेहजार होता ही नहीं.

दिल की मिषाल टाकी सी हे इसी लिये रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया जिसम के अन्दर एक लोठडा हे गोश्त का टुकडा हे जब वो ठीक और दुरूस्त होता हे तो सारा जिसम ठीक और दुरूस्त रेहता हे सारे आमाल ठीक और दुरूस्त होते हे अगर हमारे कल्ब के अन्दर सलाह आ गई हमारा कल्ब ठीक हो गया हमारी नियतो के अन्दर दुरूस्तगी आ गई तो सारे आमाल ठीक हो जाएगा और अगर वो बीगड गया तो जिस्म के अंगो से जितने भी आमाल वुजूद में आते हे वो सारे खराब और बिगडे हुवे वुजूद में आएगे इस लिये के जहां से अमल निकल रहा हे अमल का सरचश्म ही बिगडा हुवा हे तो फिर वहां से जो कुछ भी आएगा वो बिगडा हुवा ही आएगा जैसे पानी टंकी से सप्लाय हो रहा हे अगर वही गडबड हे वहां से पानी ज़हरीला निकल रहा हे तो सब जगह ऐसा ही ज़हरीला पहुंचेगा और वहां अगर अच्छा हे तो दूसरी जगह अच्छा ही पहुंचेगा.

लौग अपनी नियतो के मुताबिक उठाए जाएंगे

हज़रत आयशा (रदी) से रिवायत हे वो फरमाती हे के रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फरमाया एक लश्कर काबा पर हमला करने के इरादा से चलेगा जब वो एक चटीयल और हमवार मैदान के अन्दर पहुंचेगा जो मक्का मुकर्रमा के करीब आस पास में वाके हे तो वो सब के सब

ज़मीन के अन्दर धसा दिए जाएगा.

इस्से कौन्सा लश्कर मुराद हे तो तमाम शुरराह ने इस सिलसिले में ये लिखा हे के रसूलुल्लाहﷺ की ये पेशीग्गोइ अभी तक अमली तौर पर वुजूद में नहीं आयी ऐसा मालूम होता हे के करबे कयामत में इसकी नौबत आयेगी.

हज़रत आयशा (रदी) फरमाती हे मैने अरज़ किया ए अल्लाह के रसूल आप फरमाते हे के इस मज्मे में जितने भी होंगे वो सब ही ज़मीन में धसा दिए जाएगा तो सब को कैसे धसा दीया जाएगा हालांके इस लश्कर में बाजार वाले भी हे.

यानी आम तौर पर ऐसा होता हे के जब इस किसम का लश्कर किसी जगह हमला के इरादे से आगे बडता हे तो बहुत से लौग तिजारत की गरज़ से उन्के साथ हो जाते हे उन लौंगो की नियत वो नहीं होती जो लश्कर का मकसद होता हे उनका मकसद तो अपने कारोबार को फुरूग दैना और कमाना होता हे मतलब ये हे के वो लौग तो काबातुल्लाह पर चढाइ के इरादे से नहीं निकले थे फिर उनको भी कैसे धसा दिया जाएगा इसी तरह बहुत से लौग ऐसे भी होंगे जो रास्ते में साथ हो गये ऐसा होता हे के कोई मज्मा जा रहा होता हे या जुलूस निकलता हे तो हम देखते हे के सडक के उपर

जहां से वो जुलूस गुज़रता हे तो बहुत से लौग जो अपने काम से जा रहे होते हे वो भी थोडी दैर के लिए उनके साथ नज़र आते हे इसी तरह उनके साथ भी बहुत से लौग ऐसे होंगे आप फरमाते के सब ही धसा दिए जाएगा जो काबातुल्लाह पर चढाइ के इरादा से जा रहे थे उनका धसा दिया जाना तो समज में आता हे लैकीन साथ ही इन गुज़र ने वालों को कयुं धसा दिया जाएगा रसूलुल्लाहﷺ ने जवाब में इरशाद फरमाया दुनिया में तो सब के साथ वही मामला किया जाएगा जो लौग बाजार वाले थे कमाने वाले और बहुत से वो लौग जो ऐसे ही साथ हो गये थे वो सब ही धसं दिये जाएगा यानी दुनियवी एतेबार से जो अजाब उन पर भेजा गया था उसमे तो सब ही शरीक होंगे अल बत्ता कयामत के रोज़ वो लौग अपनी नियतो के मुताबिक उठाये जाएगा.

कयामत के रोज़ अल्लाह के यहां मामला नियतो के मुताबिक होगा और इस्से ये भी मालूम हूवा के दुनियवी एतेबार से जब कोई आदमी ऐसे गलत लौगों के साथ फंस जाता हे तो चाहे उस्का इरादा इस बुराइ और गलत काम का नहीं होता लैकीन उन्के साथ होने की वजह से जो मामला कुदरत की तरफ से उन्के साथ किया जाता हे वही मामला इसके साथ भी किया जाता हे कयामत के

रौज़ चाहे उस्के साथ वो मामला नहो इस लिये गलत लौगों से अपने आपको बचाने का भी आदमी को एहतेमाम करना चाहिए.

अल्लाह हमे सही नियत और इखलास का एहतेमाम और बातों पर अमल की तौफीक नसीब और हमारी हिफाज़त फरमाये. आमीन.